कुल पृष्ठ संख्या–32 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा नहीं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures)

(In Words) --

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में --

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी

विषय ......हिन्दी......

परीक्षा का दिन ....

दिनांक ....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायी ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ 15 1/4 को 16, 17 1/2 को 18, 19 3/4 को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Round off)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर परीक्षक कोड

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाइन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रानिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

1\.
(अ) समाज के कल्याण के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम अपने परिवार में शान्ति, सद्भाव और परस्पर प्रेम की भावना रखना आवश्यक है। तभी वह समाज के हित-चिंतन में अपना मन लगा पायेगा।
(ब) किसी देश को प्रशंसनीय बनाने में उसके निवासियों की देश के प्रति गर्व भावना, स्वाभिमान, सह-अस्तित्व और बन्धुत्व की भावना आदि तत्वों का योगदान होता है।

2\.
(अ) किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व हमें उस कार्य के परिणाम, हानि-लाभ, ऊँच-नीच आदि के बारे में पूर्णतः सोच-विचार करना चाहिए।
(ब) देश के सुधार के लिए हमें स्वदेश-प्रेम, परोपकार आदि भावों को बढ़ाना चाहिए तथा जातिवाद, क्षेत्रवाद, साम्प्रदायिकता आदि विषयों पर अंकुश लगाना चाहिए।

3\.
(अ) खड़ी बोली हिन्दी ने अपने शब्द-भण्डार का विकास हिन्दी की पाँच उपभाषाओं में से एक पश्चिमी हिन्दी से किया है।
(ब) भाषा को शुद्ध बोलने, शुद्ध लिखने तथा शुद्ध रूप में समझने से संबंधित ज्ञान जिस शास्त्र द्वारा

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

दिया जाता है, उसे व्याकरण शास्त्र कहते हैं।
हिन्दी व्याकरण शास्त्र के प्रमुख भाग -
1. वर्ण-विचार 2. शब्द-विचार
3. पद-विचार 4. वाक्य-विचार

4.
(अ) चीन - व्यक्तिवाचक संज्ञा, पुल्लिंग, एकवचन
कर्ता कारक, 'करता है' क्रिया का कर्ता।
(ब) से पहले - कालवाचक क्रिया-विशेषण अव्यय
'आ गई' क्रिया के समय का बोध
करवा रहा है।

5. यह वाक्य अभिधा शब्द-शक्ति का है।
जहाँ वाक्य में साधारण अर्थ (वाच्यार्थ)
प्रकट होता है, उसे अभिधा शब्द-शक्ति
कहते हैं तथा प्रस्तुत वाक्य में साधारण
अर्थ ही प्रकट हो रहा है।

6. उपर्युक्त दोहे में श्लेष अलंकार है क्योंकि
इसमें 'तरयौना' शब्द के दो अर्थ हैं -
[i] नाक कान में पहने जाने वाला एक आभूषण।
[ii] तरयौ + ना अर्थात् अभी तक मुक्ति
नहीं मिली है, उद्धार नहीं हुआ है।
जहाँ एक शब्द एक ही बार प्रयुक्त हो
परंतु अर्थ अनेक निकले, उसे श्लेष अलंकार
कहते हैं। अतः दोहे में श्लेष अलंकार है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

7\.
(अ) Schedule → अनुसूची
Project → परियोजना

10\. कदली, सीप - - - - - - - - - - - - - - कटायो सीस॥

सप्रसंग - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' के 'संत-वाणी' शीर्षक काव्य-संग्रह से संकलित है। इसके रचयिता कबीरदास जी हैं। इसमें संगति के परिणाम व मान के महत्त्व के बारे में बताया गया है।

व्याख्या - कबीरदास जी कहते हैं कि व्यक्ति जैसी संगति करता है, वैसा ही बन जाता है। जैसे स्वाति नक्षत्र के समय जल की बूँद तीन अलग-अलग संगतियों से तीन भिन्न-भिन्न वस्तुओं में बदल जाती है। यह बूँद केले पर पड़ने से कपूर, सीप में पड़ने पर मोती तथा सर्प के मुख में पड़ने पर विष में बदल जाती है। अतः मनुष्य को सोच-समझकर संगति करनी चाहिए।

कबीर जी कहते हैं कि शिवजी ने सागर-मंथन से निकले विष को पीया था, फिर भी वे जगदीश्वर कहलाये क्योंकि वह उन्होंने मानपूर्वक पीया था। लेकिन राहु ने छल-कपट से अमृत का पान किया था, फिर भी उसे सिर कटवाना पड़ा। अर्थात व्यक्ति को कभी भी मान का त्याग नहीं करना चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष- 1. इसकी भाषा सरल, सहज व स्वाभाविक है।
2. इसमें उपदेशात्मक शैली है।
3. प्रसाद गुण व शांत रस है।
4. दोहा छंद व अनुप्रास अलंकार है।
5. इसमें संगति के फल व मान के महत्व के बारे में बताया गया है।

11. मुझे तो - - - - - - - - - - - - - - - श्मशान में।

सप्रसंग -

प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'सृजन' में संकलित, सरदार पूर्णसिंह द्वारा रचित निबंध 'मजदूरी और प्रेम' से लिया गया है। इसमें हाथ से किये हुए काम की महत्ता को उजागर किया गया है।

व्याख्या -

लेखक कहते हैं कि जब मनुष्य कोई कार्य अपने हाथों से करता है तो उसमें उसके हृदय की पवित्र-भावनाएँ तथा विचार, प्रेम आदि सूक्ष्म रूप में मिश्रित हो जाते हैं। अतः हाथ से किये गये कार्य में प्रेममय पवित्र आत्मा की सुगंध आती है। लेखक उदाहरण देते हुए

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कहते हैं कि चित्रकार राफेल द्वारा चित्रित चित्रों में उनकी कला-कुशलता को देखकर बहुत अच्छा लगता है। उन्हें चित्र बनाये सदियाँ बीत गईं परंतु अब भी जब उन चित्रों को देखते हैं तो आभास होता है कि उस समय उनके मनोभाव क्या रहे होंगे। चित्र में छिपी चित्रकार की आत्मा के भी दर्शन हो जाते हैं। परंतु यंत्रों जैसे-कैमरा आदि द्वारा बने फोटो निर्जीव से लगते हैं। इनमें और हाथ के चित्रों में बस्ती और श्मशान, रात और दिन जितना अंतर होता है।

विशेष- इसमें सरल, सहज भाषा है। विवेचनात्मक शैली है तथा

12. बाज़ार में एक जादू है' यहाँ जादू का अर्थ है 'बाज़ार का आकर्षण'। यह जादू व्यक्ति के मन को इस प्रकार आकर्षित करता है, जैसे लोहे को चुंबक। बाजार का यह जादू उन्हीं लोगों पर चलता है जिनका मन खाली हो अर्थात जिन्हें अपनी आवश्यकताओं का ज्ञान न हो। जो यह न जानता हो कि उसे क्या चाहिए?

उदाहरण के लिए 'बाज़ार-दर्शन' अध्याय में लेखक जैनेन्द्र कुमार ने बताया है कि उनका एक मित्र बाज़ार से कुछ सामान लेने गया परंतु जब वह लौटा तो उसके पास बहुत सारे थैले थे अर्थात बाज़ार के

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक | प्रश्न संख्या | परीक्षार्थी उत्तर

जादू ने उसे अपने जाल में फँसा लिया था। जब व्यक्ति को अपनी जरुरतों का ज्ञान नहीं होता, तब उसे लगता है कि उसके पास वस्तुओं की कमी है। इस स्थिति में वह बाज़ार की हर चीज खरीदने के लिए लालायित हो जाता है। ऐसा लगता है मानो बाज़ार उसे आमंत्रित्र कर रहा हो कि "आओ मुझे लूट लो"।

परंतु जिनका मन भरा हो अर्थात जिन्हें अपनी जरुरतों का ज्ञान हो, वे इस जादू में नहीं फँसते। जैसे- भगतजी को केवल काला नमक व जीरा चाहिए था, तो वे केवल उसे ही खरीदते थे। बाज़ार का जादू उन पर नहीं चलता था।

13. कवि हरिवंश राय बच्चन हालावाद के प्रवर्तक तथा छायावाद के प्रमुख कवि थे। उन्होंने अपनी कविता 'आत्म-परिचय' में अपनी पहचान, अपनी अस्मिता का बोध करवाया है। कवि हरिवंश राय बच्चन स्वयं के मनोभावों को ही श्रेष्ठ मानते थे, वे अपने हृदय के भावों के अनुसार ही कार्य करते थे। संसार की या अन्य लोगों की

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

बातों पर वे जरा भी ध्यान नहीं देते थे। उनके अनुसार हमें इस संसार के बारे में सोचना भी नहीं चाहिए क्योंकि यह संसार अपूर्ण है, इसमें प्रेम, उत्साह व मस्ती की कमी है। यहाँ के लोग बहुत स्वार्थी हैं तथा हर समय धन-वैभव के संचय में ही लगे रहते हैं। अतः हमें भी इस संसार के सुख-दुःख आदि का तो ध्यान रखना चाहिए लेकिन कभी भी इस संसार के स्वार्थ रूपी चक्रव्यूह में पड़कर अपनी पहचान व अपनी अस्मिता को नहीं भूलना चाहिए। संसार के लोग कुछ भी करें, कुछ भी कहें, हमें अपने चरित्र को कभी भी कलंकित नहीं करना चाहिए। हमें तो प्रेम, उत्साह व आनंद से अपना जीवन-यापन करना चाहिए।

14. सूरदास ने 'भ्रमरगीत' से संबंधित पदों में निर्गुण का खण्डन कर सगुण का मण्डन किया है। उन्होंने श्रीकृष्ण-भक्ति को ही सर्वश्रेष्ठ माना है तथा श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम गोपियों के प्रेम को प्रकट किया है। गोपियाँ श्रीकृष्ण की विरह-वेदना से व्यथित होने पर भी श्रीकृष्ण के प्रति अपने अटूट प्रेम को बनाये रखती हैं। अतः प्रेमाभक्ति की अमृतधारा सूरदास के पदों में निर्बाध प्रवाहित हुई है।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15. तुलसीदासजी ने धैर्य, धर्म, विवेक, साहित्य, सत्यव्रत तथा ईश्वर की भक्ति को बुरे समय के साथी बताया है क्योंकि बुरे समय में जब धन-दौलत, यश-वैभव मित्र, परिवारगण आदि सभी मनुष्य का साथ छोड़ देते हैं, तब ये सब ही उसे उस बुरे समय को व्यतीत करने में सहायता करते हैं।

16. डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अनुसार सफल प्रजातंत्र के लिए आवश्यक है कि शासन की दृष्टि में सभी समान हों क्योंकि अगर ऐसा नहीं होगा तो पक्षपात के शिकार व्यक्तियों में शासन के प्रति आक्रोश उत्पन्न होगा, उनमें विरोध भावना जागृत होगी जो एक प्रजातंत्र के लिए सबसे बड़ा खतरा है,

17. ममता संतोषी व निर्लोभी स्वभाव की थी। जब उसके पिता मंत्री चूड़ामणि ने शेरशाह से उत्कोच लिया तो ममता ने इसे गलत माना। उसके अनुसार भविष्य की विपदा की आशंका से उत्कोच लेना गलत है। वे ब्राह्मण हैं। अगर विपदा आई भी तो लोग उनकी सहायता अवश्य करेंगे

क द्वारा ल अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

18. कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'-

कन्हैयालाल मिश्र का जन्म सन 1906 में सहारनपुर जिले के देवबंध नामक ग्राम में हुआ था। वे बचपन से ही बहुत प्रतिभाशाली थे। उन्होंने हिन्दी में काव्य, कहानी, निबंध, आलोचना, रिपोर्ताज आदि विधाओं में अपना लेखन कार्य किया। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

वे 'ज्ञानोदय' के सम्पादक भी रहे परंतु 'नया जीवन' पत्रिका के प्रकाशन से उन्हें अधिक ख्याति मिली। उनकी प्रमुख रचनाएँ हैं- 'जिंदगी मुस्कुराई', 'माटी हो गया सोना', 'जिए तो ऐसे जिए', 'बाजे पायलिया के घुंघरू और दीप जले' तथा 'शंख बजे'।

उनका लघु कथा संग्रह 'आकाश के तारे: धरती के फूल' नामक शीर्षक के रूप में प्रकाशित हुआ है।

वे मूलतः एक पत्रकार थे। उन्होंने साक्षात्कार के लिए 'अन्तर्व्यूह' शब्द रचा था। उनके रिपोर्ताज 'क्षण बोले: कण मुस्कराए' शीर्षक में संकलित है।

19. शमशेर बहादुर सिंह ने राख से लीपा हुआ चौका, काली सिल, काली स्लेट, गौर झिलमिल देह, आदि उपमानों का उपयोग

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

किया। इनके माध्यम से उन्होंने भोर के समय का सुंदर व जीवंत वर्णन किया।

20. इस कथन के आधार पर वसंत की दो चारित्रिक विशेषताएँ इस प्रकार है-
1. वह वर्तमान समय के बनावटीपन व दिखावटीपन के आचरणों का विरोधी है।
2. वह स्वच्छता की अपेक्षा संतुलित आहार को उत्तम स्वास्थ्य के लिए आवश्यक मानता है।

21. इस विषय पर गांधीजी के विचार थे कि मनुष्य और उसका काम दोनों पृथक् विषय हैं। अच्छे काम के प्रति आदर तथा बुरे काम के प्रति तिरस्कार की भावना रखनी चाहिए ~~लेखन~~ लेकिन उस व्यक्ति के प्रति सदैव आदर-भावना रखनी चाहिए। चाहे वह बुरे काम करे या अच्छे।

22. इस कथन से लहनासिंह का मन बहुत दुःखी व क्रोधित हुआ। वापस लौटते वक्त उसने एक बच्चे को मोरी में ढकेला, कुत्ते को पत्थर मारा, छाबड़ी वाले की

क्षक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

ई. पूरे दिन की कमाई खोई, गोभीवाले के ठेले में दूध उड़ेला और एक वैष्णवी से टकराकर अँधे की उपाधि पाई।

23. एलोरा की गुफा श्रृंखला के तीन अंग है-
1. बौद्ध गुफाएँ - इनकी संख्या 12 है तथा खुदाई चौथी से आठवीं शताब्दी के मध्य हुई।
2 हिन्दू गुफाएँ - इनकी संख्या 17 है तथा खुदाई 7 वीं - 8 वीं शताब्दी में हुई।
3. जैन गुफाएँ - संख्या 4 है तथा खुदाई हिंदू गुफाओं के बाद हुई।

24. देवनारायण जी, रामदेव जी व जम्भेश्वर को 'राजस्थान के गौरव' कहते हैं क्योंकि-

1. देवनारायण जी -
इनका जन्म माघ शुक्ल सप्तमी, वि. स. 1097 (भानु सप्तमी) को हुआ था। इन्होंने गोठा के निवासियों को राजा दुर्जनसाल के अत्याचार से मुक्त कराया। पीपलदे व नेतलदे की कुरुपता को दूर किया, सारथियों को और उनकी बहन सुगाना के पुत्र को पुनर्जीवित किया

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

तथा सूखी नदी में से पानी निकाला। इन्होंने नीम व गोबर के महत्व को बताया।

नागवंशीय गुर्जर इन्हें 'विष्णु का अवतार' मानते हैं।

2. रामदेवजी -

इनका जन्म पोकरण के रूँणीचा में भाद्रपद शुक्ल द्वितीया, को वि. स. 1409 में हुआ था। पिता का नाम अजमल व माता मैणादे थीं। इन्होंने 'सापलमेर' में भैरव तांत्रिक को मारा। प्रमुख चमत्कार (परचे) - नीनलदे की पंगुता को दूर किया, लक्खी बनजारे की मिश्री को नमक बनाया, पाँचों पीरों के कटोरे पल भर में मक्का से ले आये।

वि. स. 1442, भाद्रपद शुक्ल दशमी को उन्होंने समाधि ले ली।

3. संत जम्भेश्वर -

इनका जन्म पीपासर गाँव में कार्तिक अष्टमी को हुआ था। 'समराथल धोरां' में अपना मुकाम बनाया। इन्होंने प्रकृति संरक्षण, जीवन के नियमन व सदाचार के उद्देश्य

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

से 29 नियम बनाये जिन्हें मानने वाले 'बिश्नोई' कहलाये। सिकंदर लोदी को भी गोहत्या न करने के लिए मना लिया था। बीकानेर के लालसर गाँव में समाधि ली।

25. 1. टीवी समाचारों में दृश्य या विजुअल की प्रधानता होती है।
2. दृश्य के अनुसार ही स्क्रिप्ट लिखी जाती है।
3. एकरेखीय व उलटा पिरामिड शैली का उपयोग होता है।
4. एंकर इण्ट्रो की तरह खबरें पढ़ता है।
5. इसमें निम्न फॉर्मेट अपनाते हैं-
(i) ब्रेकिंग न्यूज (ii) ड्राई एंकर (iii) फोन इन
(iv) एंकर बाइट (v) एंकर लाइव (vi) एंकर पैकेज

26. संपादक के नाम पत्र लिखते समय मुख्य तीन बातों का ध्यान रखा जाता है-
1. प्रासंगिकता 2. समसामयिकता
3. उपयोगिता

अगर ~~समाचार~~ विषय उपयोगी व प्रासंगिक नहीं होगा तथा पुराना होगा (समसामयिक न हो) तो उस पत्र को संपादकीय पृष्ठ पर प्रकाशित नहीं किया जायेगा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

27. किसी साक्षात्कार को लिखने के बाद व प्रकाशन से पूर्व निम्न कार्य करने चाहिये-

1. उसमें से उन बातों को हटा देना चाहिए जो पाठक मन के अनुरूप न हो
2. सवाल-जवाब क्रमिक रूप में होने चाहिए।
3. विषय के अलावा सामग्री को भी हटा देना चाहिए।
4. भाषा को सरल व सहज रखना चाहिये

28. यदि मुझे पत्रकार बनना पड़े तो मैं खेल पत्रकारिता को अपनाऊँगा क्योंकि-

1. वर्तमान में खेलों का बहुत प्रचार-प्रसार हो रहा है।
2. अनेक नये खेल भी उभर रहे हैं।
3. खेल पत्रकारिता में लाइव पत्रकारिता भी होती है।
4. इसमें पत्रकार की निम्न विशेषताएँ अपेक्षित हैं-

(i) सूक्ष्म व खोजपूर्ण दृष्टि
(ii) सच्चाई प्रकट करने का साहस
(iii) खेल के नियमों की जानकारी
(iv) बिना प्रलोभन के 'खेल को खेल की भावना से खेलो' वाक्य का प्रसार।

अगर इनमें भी मुझे टीवी हेतु पत्रकारिता में मौका मिले तो उसे प्राथमिकता दूँगा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

29. यात्रा की विशेषताओं के संदर्भ में मोहन राकेश के विचार-

1. यात्रा करने से मनुष्य की जिज्ञासा वृति शांत होती है।
2. दबाव में कमी आती है।
3. मन की कुंठाएँ दूर होती हैं।
4. नये स्थल से सामंजस्य स्थापित होता है।
5. नये-नये मित्र बनते हैं जिनसे बहुत कुछ सीखने को मिलता है।
6. आचरण में सभ्यता आती है।
7. पर्यटन व व्यवसाय को प्रोत्साहन मिलता है।
8. यात्रा स्थल की सामाजिक-भौगोलिक संरचना, लोगों के संबंध व बोली का पता चलता है।

इस प्रकार यात्रा करना मनुष्य की नैसर्गिक प्रवृति है।

कृपया पृष्ठ पलटिये

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

8. प्रेषक :- शासन सचिव,
शिक्षा विभाग, राजस्थान सरकार,
जयपुर।

प्रेषिति :- राज्य के समस्त संस्था प्रधान,
संस्था कार्यालय।

पत्रांक - 057/08 दिनांक - 10 मार्च, 2018

विषय - गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की सुनिश्चितता
के संदर्भ में।

प्रिय श्री,

आप समस्त संस्था प्रधानों को सूचित किया जाता है कि राज्य सरकार ने गुणवत्ता पूर्ण शिक्षा की सुनिश्चितता हेतु एक अभियान चलाया है जिसके अंतर्गत विद्यार्थियों को किताबी ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक व स्वरोजगारोन्मुखी शिक्षा दी जानी सुनिश्चित की गई है।

अतः आपसे अनुरोध है कि आप सभी अपने-अपने संस्थाओं में इस ओर ध्यान देवें।

भवदीय,
(हस्ताक्षर)
रविकुमार
शासन सचिव,
शिक्षा विभाग,
जयपुर।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

9. (अ) बालिका शिक्षा

1. प्रस्तावना -
वर्तमान समय में शिक्षा एक महत्ती आवश्यकता बन गई है। शिक्षा के द्वारा मनुष्य का सर्वांगीण विकास होता है। उसमें सभ्यता, मौलिकता आदि गुणों का समावेश होता है। बालिका शिक्षा भी एक आवश्यक पहलू है। मूलतः प्राचीन काल से ही बालिकाओं की शिक्षा की ओर कम ध्यान दिया जाता है परंतु वर्तमान में इसकी अत्यंत आवश्यकता है।

2. प्राचीन समय में बालिका शिक्षा -
जब हम इतिहास उठाकर देखते हैं तो पता चलता है कि प्राचीन काल में बालिका शिक्षा को अत्यंत महत्त्व दिया जाता था। इसका प्रमाण है - हमारे इतिहास की विदुषी महिलाएँ जैसे - गार्गी, अत्रेय, शकुन्तला, अपोलो, दमयन्ती आदि। ये सभी बहुत ही बुद्धिमान थी जो हर कार्य में चाहें वह राजनीति-शास्त्र हो, चाहे अर्थ-शास्त्र, चाहे पाक-कला, चाहे युद्ध कला सभी में निपुण थी।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3. बालिका अशिक्षा के कारण-

वर्तमान में लोग बालिका शिक्षा को अधिक महत्त्व नहीं देते क्योंकि उनका मानना है कि-

'कन्या पराया धन है'.

यह ध्यान में रखकर कि कन्या तो विवाह के बाद अपने ससुराल चली जायेगी, उसका शिक्षा से हमें क्या लाभ होगा? लोग बालिकाओं को शिक्षित नहीं करते हैं और उन्हें घर की चारदीवारी में समेट लेते हैं जिनसे उनकी प्रतिभा का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता है।

4. बालिका शिक्षा हेतु अभियान-

वर्तमान में बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु नरेन्द्र मोदी ने 'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ' अभियान प्रारंभ किया है। यह 22 जनवरी 2015 को पानीपत, हरियाणा से देश के 160 जिलों में लागू किया गया था लेकिन इसकी सफलता को देखते हुए इसे 8 मार्च 2018 से संपूर्ण देशभर में 690 जिलों में लागू कर दिया गया है जो बालिका शिक्षा हेतु धन, प्रोत्साहन प्रदान करता है।

शिक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

5. बालिका शिक्षा के परिणाम -

स्त्री दो कुलों का उद्धार करती है। अगर वह शिक्षित होगी तो हमारे परिवार शिक्षित होंगे, समाज शिक्षित होगा, देश शिक्षित होगा तथा इस तरह संपूर्ण विश्व ही साक्षर बन जायेगा।

बालिका की शिक्षा से वह हर क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा सकती है, आज नारी राजनीति, विज्ञान, खेल, अंतरिक्ष समाचार-पत्र, उद्योग, चिकित्सा हर क्षेत्र में कार्यरत है व पुरुषों से भी बेहतर कार्य कर रही है। इसके उदाहरण - इंदिरा गांधी, प्रतिभा पाटिल, फोगाट बहनें, पीवी सिंधु, दीपा करमाकर, प्रियंका चौपड़ा है।

ना देना सोना-चाँदी, ना कोई मँहगे उपहार।
शिक्षा है अनमोल रतन, देना यही सौगात।

6. उपसंहार -

नर और नारी मानव जीवन समाज रूपी रथ के दो पहिये हैं। इनके सामंजस्य से ही समाज विकसित होगा। अगर नारी शिक्षित होगी तो वह विकास में पूर्ण योगदान दे पायेगी। अतः बालिका शिक्षा अति आवश्यक है।

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

7. मेरा मत-

एक विद्यार्थी व युवा होने के नाते इस संबंध में मेरा मत है कि हम युवाओं को बालिका शिक्षा हेतु सर्वत्र जनजागृति फैलानी चाहिए तभी हमारा देश प्रगति के पथ पर अग्रसर होगा।

वर्तमान में कुछ भी असंभव नहीं है क्योंकि कहा भी गया है

मंजिल उन्हीं को मिलती है
जिनके सपनों में जान होती है,
परों से कुछ नहीं होता
हौसलों से उड़ान होती है

समाप्त

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER 164/2018